इस्लामी जिन्दगी
गुजारने के लिए सुन्नते नबवी
अज़ीम मजमुआ

रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतें

हज़रत मौलाना हकीम
मोहम्मद अख़्तर साहिब मद्दजिल्लुहू

फानी बुक डिपो
425/3, उर्दू आर्किट मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6
फोन : 3242427,3265866. (घर) 5702399

इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए
सुन्नते नबवी का अज़ीम मजमूआ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
की

सुन्नतें

हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अख़्तर साहिब मद्दज़िल्लुहू
मजाज़ हज़रत मौलाना अबरारूलहक साहिब मद्दज़िल्लुहू

प्रकाशक

फानी बुक डिपो

425/3, उर्दू मार्किट मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6
फोन : 3242427,3265866. (घर) 5702393

किताब : रसूलुल्लाह सल्ल0 की सून्नतें

मुसन्निफ : हज़रत मौलाना हकीम मूहम्मद अख़्तर साहब

ज़ेरे निगरानी : अबुलख़ैरात आज़मी

तादाद : 2100

मूल्य : 10—00 रुपये

विषय सूची

फ़हरिस्त उनवानात

क्रम उनवानात (विषय)

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

نحمده ونصلي علىٰ رسوله الكريم

१ पेश लफ्ज़ (प्रस्तावना)

मुहिय्युस्सुन्नह हज़रत मौलाना शाह अबरारुल हक़ साहेब दामत बरकातुहुम ख़लीफ़ा अरशद हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी क़ुद्दिससिर्रुहू को अल्लाह तआला ने इस्लाहे उम्मत, इह्या (जीवित करने के लिये) सुन्नत और इस्लाहे मुनकरात (निवर्तियों) के लिये मिसाली हौसला तौफ़ीक़ और इमतियाज़ (विशेषता) बख़्शा है। फिर "नह्यि अ़निल मुनकरात" (बुरी बातों-कामों से रोकना) के जज़्बे (मनोभाव)के साथ हुस्ने बयान (अच्छा वर्णन) का भी ऐसा मल्का (कोशलता) और शाने जाज़बिय्यत (आकर्षक) अ़ता फ़रमाई है कि आपकी नकीर बाइस (हेतु) तनफ़्फ़ुर (घृणा) नहीं।

हज़रते अक़दस (म. ज़ि.) अपने मल्फ़ूज़ात (उपदेशावली) व इरशादात (संदेशों) में वुज़ू नमाज़ और खाने-पीने वग़ैरा बल्कि सारी जिन्दगी में हुज़ूर अक़दस स० के तरीक़े के मुताबिक़ अ़मल करने की मुसलसल ताकीद (आग्रह) फ़रमाते हैं। अक्सर फ़रमाया करते हैं, "दुनिया में हम हर चीज़ उ़म्दा पसंद करते हैं, अमरूद उ़म्दा (अच्छा) हो, केला उ़म्दा हो, मकान उ़म्दा हो, लेकिन वुज़ू उ़मदा हो, नमाज़ उ़म्दा हो, इसकी फ़िक्र नहीं, ज़माना हो गया वुज़ू करते नमाज़ पढ़ते मगर वुज़ू और नमाज़ की सुन्नतें

मालूम नहीं। इल्ला मा शाअल्लाह (कहीं-कहीं) एक दो मिनट घर की औरतों बच्चों को एक दो सुन्नत भी खाने पीने की, वुज़ू नमाज़ की या सोने जागने वग़ैरा की सिखाना शुरु कर दें तो एक साल में कितनी सुन्नतों का इल्म (ज्ञान) हो सकता है। फिर अमली तौर पर उनकी निगरानी (निरीक्षण) भी की जाती रहे कि इन सुन्नतों पर अ़मल भी हो रहा है या नहीं, इसी तरह दीनी मदारिस व मकातिब (पाठशालाएं) बिल्खुसूस (विशेषरुप से) दारुलइक़ामा (छात्रवास) वाले मदरसों में इसका एहतिमाम (प्रबन्ध) हो कि एक मिनट का मदरसा जारी किया जाये और एक सुन्नत एक दिन बतलाई जाये और दूसरे दिन सुनी जाये।

हज़रत अक़्दस यह भी फ़रमाया करते हैं कि इन आसान आसान सुन्नतों पर अ़मल करने से रुह में नूर पैदा होगा और नूर से रूह को कुव्वत (शक्ति) हासिल होगी जिससे उन सुन्नतों पर भी अ़मल की हिम्मत पैदा हो जायेगी जिन पर अ़मल करना दुश्वार (मुश्किल) है और मुआ़शरा (समाज) रुकावट पैदा करता है।

हज़रत शैख़ुल हदीस (हदीस के गुरु) मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहिब रहमतुल्लाहि अलैह: ने मुतवस्सलीन (आश्रय लेने वाले) के लिये जो मामूलात (नियमों) शाए (छपवाये) किये थे इनमें एक ज़रुरी तम्बीह (डांट) फ़रमाई गई है, मौक़े की मुनासबत (संबंध) से उनको भी नक़ल किया जाता है फ़रमाते हैं, इत्तिबाए सुन्नत का ज़्यादा से ज़्यादा एहतिमाम रखो (पाबंदी करो) इबादात में मामूलात (नियमों) में इसकी जुस्तुजू (खोज) रखें की

हुज़ूर अक्दस स० का क्या मामूल (नियम) हत्ता कि (यहां तक कि) खाने पीने तक में हुजूर स० की मर्गूब चीजों की तह्कीक करके इत्तिबा की कोशिश करें। अलबत्ता (निःसंदेह) यह ज़रुरी है कि अपने ज़ोअ्फ़ (कमज़ोरी) की वजह से जिन उमूर (कामों) में इत्तिबा का तहम्मुल (बर्दाश्त) नहीं उनकी इत्तिबा न की जाये। जैसा कि फ़ाकों (अनशन) की कसरत पसंदीदा (पसंद होने वाला) और मर्गूब बनाने की कोशिश रखें (इन्तहा) दुआऐं तो हर मौके (अवसर) की "अज़कारे मसनूना" (र० स० के ज़िक्र) और "मसनून दुआएं" (र० स० की दुआऐं) नामी किताबों में तफ़सील (व्याख्या) से मिल जाती हैं, हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अख़्तर साहिब को अल्लाह तआला जज़ाऐ ख़ैर अता फ़रमाये (अच्छा बदला मिले) कि उन्होंने अहादीस (हदीसों) के मोतबर (विश्वस्त) ज़ख़ीरे (संग्रह) से "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतें" जमा फ़रमाकर तालिबीन (इच्छुक) के लिये बहुत सहूलत और आसानी फ़रमा दी है।

इस सिलसिले (श्रेणी) में मज़ीद (और अधिक) अकाबिर (महापुरुषों) व अहले हक के इत्तिबाऐ शरीअ़त व एहतिमाम सुन्नत के वाकिआत का मुताला (अध्ययन) भी बेहद मुफ़ीद (लाभदायक) और अ़मल के लिये मुईन (मददगार) होगा। इन हज़रात के वाकिआत (किस्से) बेशुमार (असंख्या) हैं जो इनकी "सवाने हयात" (जीवनी) में देखे जा सकते हैं- अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वे इस रिसाले को कबूल व नाफ़े (लाभदायक) बनाये और हम सब को इत्तिबाए सुन्नत की तौफ़ीक अ़ता फ़रमाये। आमीन सुम्म आमीन।

दीन व ईमान की आज़माइश

मुसलमानो !

अल्लाह के प्यारे नबी स० की ज़िन्दगी से सबक़ हासिल करो दीन के लिए मुसीबतें उठानी सीखो ईमान के लिए अज़ीयतें (मुसीबतें) बर्दाशत करना सीखो सच्चाई के लिए क़ुरबान होना सीखो सच्चों के लिए मरना सीखो, अल्लाह के लिए शहीद होना सीखो। (एजाज़ शादाब)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मार्निरहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम

२. सोकर उठने की सुन्नतें

१. नींद से उठते ही दोनों हाथों से चेहरा और आंखों को मलना ताकि नींद का ख़ुमार (नशा) दूर हो जाये।

२. सुबह जब आंख खुले तो तीन बार "अल्हमदु लिल्लाह" (तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिये हैं) कहें और कलमा तय्यिबा "ला

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' (अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद स० उसके रसूल हैं) पढ़कर यह दुआ पढ़ें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बअ् द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर (बुख़ारी, अबूदाऊद निसाई) (उस अल्लाह तआला का बहुत बहुत शुक्र है जिसने हमें मारने के बाद जिला दिया और उसी की तरफ़ मरकर जाना है)

बुख़ारी, अबूदाऊद निसाई

३. जब भी आप सोकर उठें तो मिस्वाक कर लें। मुस्नद अह्मद, अबूदाऊद (फ़ायदा) वुज़ू में दोबारा मिस्वाक की जायेगी सोकर उठते ही मिस्वाक कर लेना अ़लाहिदा सुन्नत है।

४. पाइजामा या शलवार पहने तो अव्वल दाहिने पांव में फिर बायें पावं में, कमीज़ पहनें तो पहले दाईं आस्तीन में हाथ डाले फिर बाईं आस्तीन में, इसी तरह सदरी। ऐसे ही जूता पहले दायें पांव में फिर बायें पांव में पहनें और जब उतारें तो पहले बाईं तरफ़ का उतारें फिर दाईं तरफ़ का और बदन की पहनी हुई हर चीज़ के उतारने का यही तरीक़ा मसनून (सुन्नत है)

५. बरतन में हाथ डालने से पहले तीन मरतबा हाथों को अच्छी तरह से धो लें।

2

६. इस्तिन्जा (तहारत) के लिये पानी और ढेले दोनो ले जायें-तीन ढेले या पत्थर हों तो मुस्तहब है। (र० स० का पसंदीदा है) अगर पहले से बैतुलख़ला (टायलट या शौचालय) में इंतिज़ाम किया हुआ हो तो काफ़ी है। फ़लैश पाख़ानों में ढेलों की वजह से दिक़्क़त हो रही हो तो ढेले न ले जाय मुफ़्ती रशीद अहमद साहिब ने टायलेट पेपर इस्तिमाल करने का मश्वरा दिया है। ताकि फ़र्श ख़राब न हो।

७. हुज़ूर (स०) सर ढांप कर और जूता पहनकर बैतुलख़ला तशरीफ़ ले जाते थे।

८. बैतुलख़ला में दाख़िल होने से पहले यह दुआ पढ़ें "बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल ख़ुबुसि वलख़बाइस" (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूं ख़बीस जिनों से मरद हो या औरत)

फ़ायदा: मुल्ला अ़ली क़ारी (र०) ने मिरक़ात में लिखा है कि इस दुआ की बरकत से बैतुलख़ला के ख़बीस (दुष्टात्मा) शयातीन (शैतान) और बंदे के दरमियान परदा हो जाता है जिससे वे शरमगाह (गुप्त अंग) नहीं देख पाते।

९ बैतुलख़ला में दाख़िल होते वक़्त पहले बांया क़दम रखें और क़दमचे पर सीधा क़दम रखें और उतरने में बांया पैर पहले क़दमचे से नीचे रखें।

१० जब बदन (शरीर) नंगा करें तो आसानी के साथ जितना नीचा होकर खोल सकें इतना ही बेहतर है।

११ बैतुलख़ला से निकलते वक़्त दाहिना पैर बाहर निकालें और यह दुआ पढ़ें।

غُفْرَانَكَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَذْهَبَ عَنِّى الْاَذٰى وَعَافَانِىْ

''ग़ुफ़रानक अलहम्दु लिल्ला हिल्लज़ी अज़हब अ़न्निल अज़ा व आफ़ानी'' (ऐ अल्लाह तुझ से बख़्शिश का सवाल करता हूं सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिये हैं जिसने मुझसे ईज़ा (नुकसान) देने वाली चीज़ दूर की और मुझे चैन (संतुष्टी) दी)।

१२ बैतुलख़ला जाने से पहले अंगूठी या किसी चीज़ पर कुरान शरीफ़ की आयत या हुज़ूर (स०) का मुबारक नाम लिखा हो और दिखाई देता हो तो उसको उतार कर छोड़ दें। फ़राग़त (समृद्धि) के बाद बाहर आकर फिर पहन लें। तावीज़ जिसको मोम जामा किया गया हो या कपड़े में सी लिया गया हो उसको पहनकर जाना जायज़ है।

-निसाई

१३ रफ़ऐ हाजत (पेशाब पाख़ाने) के वक़्त क़िबले की तरफ़ न चेहरा करें और न उस तरफ़ पीठ करें

-मिशकात

१४ रफ़ऐ हाजत करते वक़्त बिला ज़रूरत (बग़ैर ज़रूरत) शदीद (ज़्यादा) कलाम न करें इसी तरह अल्लाह का ज़िक्र भी न करें

-मिशकात

१५ पेशाब करते वक़्त या इस्तिंजा करते वक़्त उज़्वे ख़ास (गुप्त अंगों) को दायां हाथ न लगायें बल्कि बांया हाथ लगायें।

१६ पेशाब पाख़ानों की छीटों से बहुत बचें क्योंकि अक्सर अज़ाबे

क़ब्र पेशाब की छीटों से न बचने से होता है।

-तिरमिज़ी

१७ बअ़्ज़ जगह (कहीं-कहीं) बैतुलख़ला नहीं होता उस वक़्त ऐसी आड़ की जगह में रफ़ए हाजत करनी चाहिए जहां किसी दूसरे आदमी की निगाह न पड़े।

-सुनने अबूदाऊद

१८ पेशाब करने के लिये नरम जगह तलाश करें ताकि छींटें न उठें और ज़मीन उन्हें जज़ब (चुषण) करती जाये।

-तिरमिज़ी

१९ बैठकर पेशाब करें, खड़े होकर पेशाब न करें।

-तिरमिज़ी

२० पैशाब के बाद इस्तिंजा सुखाना हो तो दिवार वग़ैरा की आड़ में सुखाना चाहिए। -बहिश्ती गोहर

२१ वुज़ू सुन्नत के मुताबिक़ घर पर करना चाहिए।

२२ सुन्नतें घर पर पढ़कर जाना-मौक़ा (अवसर) न हो तो मस्जिद में पढ़ना।

२३ घर से मस्जिद या कहीं भी जाने के लिये बाहर निकल कर दुआ पढ़ना "बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह" (मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला मैंने अल्लाह पर भरोसा किया गुनाहों से बचना और नेकियों की क़ुव्वत अल्लाह ही के बस में है)

–अबूदाऊद, तिरमिज़ी, निसाई

بِسۡمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

२४ इतमीनान से जाना दौड़कर न जाना। (यह सिर्फ़ मस्जिद के लिये है)

२५ और मस्जिद से या कहीं से भी घर में आने के बाद घर वालों को सलाम करना और यह दुआ पढ़ना।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللهِ وَلَجْنَا
وَبِسْمِ اللهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا (ابوداؤد)

'अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक ख़ैरल मौलजि व ख़ैरल मख़रजि बिस्मिल्लाहि वलजना व बिस्मिल्लाहि ख़रजना व अ़लल्लाहि रब्बिना'

–अबूदाऊद

(ऐ अल्लाह! मैं तुझ से घर के अन्दर आने और घर से बाहर जाने की ख़ैर व बरकत का सवाल करता हूं। हम अल्लाह के नाम के साथ ही घर में आते हैं और अल्लाह के नाम के साथ ही घर से जाते हैं। अपने परवरदिगार अल्लाह जल्ल शानुहू पर ही हमारा भरोसा है।)

३ मिस्वाक की सुन्नतें

१ हर वुज़ू करते वक़्त मिस्वाक करना सुन्नत है।

-तरग़ीब, तरहीब

२ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़्यादा लम्बी न हो।

-बहरुर्राइक़

४ वुज़ू की सुन्नतें

वुज़ू में अठारा (१८) सुन्नतें हैं उनको अदा करने से कामिल तरीक़े से वुज़ू हो जायेगा।

१ वुज़ू की नियत करना। मसलन यह कि मैं नमाज़ के मुबाह (हलाल) होने के लिये वुजू करता हूं।

२ "बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम 'पढ़कर वुजू करना बअ़्ज़ रिवायत में वुजू की बिस्मिल्लाह इस तरह आई है "बिस्मिल्लाहिल अज़ीम वल हमदुलिल्लाहि अ़ला दीनिल इस्लाम'' (शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा है और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये ऊपर दीने इस्लाम के)

بِسْمِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَامِ

३ दोनों हाथों को पहुंचों तक तीन बार धोना।

४ मिस्वाक करना, अगर मिस्वाक न हो तो उंगली से दांतों को मलना।

५ तीन बार कुल्ली करना।

६ तीन बार नाक में पानी देना।

७ तीन बार ही नाक सिनकना।

८ हर उ़ज़्व (अंग) को तीन बार धोना।

९ चेहरा धोते वक़्त दाढ़ी का ख़िलाल करना।

१० हाथों और पैरों को धोते वक़्त उंगलियों का ख़िलाल क़रना।

११ एक बार तमाम सर का मसह करना।

१२ सर के मसह के साथ कानों का मसह करना।

१३ आज़ा-ए-वुज़ू को मलमल कर धोना।

१४ पै दर पै (लगातार) वुज़ू करना।

१५ तरतीब वार वुज़ू करना।

१६ दाहिनी तरफ़ से पहले धोना।

१७ वुज़ू के बाद कलमा शहादत- "अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह।
"मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह ही सिर्फ़ इबादत के लायक़ है और मुहम्मद स० उसके बन्दे और रसूल हैं।) पढ़े ।

१८ फिर यह दुआ़ पढ़े - "अल्लाहुम्मज अ़लनी मिनत्तव्वाबीन

वज अ़लनी मिनल मुततह्हिरीन'' (ऐ अल्लाह मुझे तौबा करने वालों और ख़ूब पाकी हासिल करने वालों में बनाइये)।

أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ

५. फ़ायदा: इस दुआ़ के मुतल्लिक़ मुल्ला अ़ली क़ारी (र०) ने फ़रमाया कि वुज़ू में ज़ाहिरी तहारत (पाकी) है। इस दुआ़ में बातिनी (अन्दर की) तहारत पेश की गयी है कि अव्वल इख़्तियारी (प्रभुत्व) थी वह हम कर चुके अब आप अपनी रहमत से हमारे बातिन को भी पाक फ़रमा दीजिये।

(६) ग़ुस्ल करने का मसनून तरीक़ा

पहले दोनों हाथ पोंहचों तक तीन मरतबा धोऐं फिर बदन पर किसी जगह मनी (वीर्य) या और कोई नापाकी लगी हुई हो तो उसको तीन मरतबा पाक कीजिए। फिर छोटा और बड़ा दोनों इसतिंजे कीजिए। (चाहे ज़रूरत न हो) इसके बाद मसनून तरीक़े पर वुज़ू कीजिये। अगर नहाने का पानी क़दमों में जमा हो रहा हो तो पैरों को न धोएं वरना उसी वक़्त भी धो डालना जायज़ है। अब

पानी अव्वल (पहले) सर पर डालिये फिर दायें कंधे पर फिर बायें कंधे पर (इतना पानी डालिये कि सर से पांव तक पहुंच जाये) बदन (शरीर) को हाथों से मलिये यह एक दफ़ा हुआ। फिर दो बारह इसी तरह पानी डालिये। पहले सर पर फिर दायें कंधे पर फिर बायें कंधे पर (और जहां बदन सूखा रहने का अंदेशा हो वहां हाथ से मलकर पानी बहाने की कोशिश कीजिये) फिर इसी तरह पानी सर से पैर तक बहाइये।

-तिरमिज़ी

फ़ायदा:

१ ग़ुस्ल के बाद बदन (शरीर) को कपड़े से पोछना भी आया है।

२ और न पोछना भी, इस लिए दोनों में से जो भी आप को अच्छा लगे कर लें ।

३ और सुन्नत की नियत कर लिया करें।

७. मस्जिद में दाख़िल होने की सुन्नतें

१ दाहिना पैर मस्जिद में पहले दख़िल करना।

२ बिस्मिल्लाह पढ़ना।

३ दरूदशरीफ़ पढ़ना मसलन-"अस्सलातु वस्सलामु अ़ला

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम'' फिर यह

४ दुआ पढ़ना- "अल्लाहुम्मफ़् तहली अबवाब रहमतिक। (या अल्लाह अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे)

५ ऐतिकाफ़ की नियत करना।

८. नमाज़ की 51 सुन्नतें

क़याम में ग्यारह (११) सुन्नतें:

१ तकबीर तह्रीमा के वक़्त सीधा खड़ा होना यानी सर को पस्त (नीचा) न करना।

२ दोनों पैरों के दरमियान चार उंगली का फ़ासला रखना। उंगलियां क़िबले की तरफ़ रखना।

३ मुक़तदी की तकबीर तह्रीमा इमाम की तकबीर तह्रीमा के साथ होना।

४ तकबीर तह्रीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना।

५ हथेलियों को क़िबले की तरफ़ रखना।

६ उंगलियों को अपनी हालत पर रखना यानी न ज़्यादा खुली रखना और न ज़्यादा बंद।

७ दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ की हथेली की पुश्त (पीठ)

पर रखना।

८ उंगलियाँ और अंगूठे से हल्का बनाकर गटटे को पकड़ना।

९ दरमियानी तीन उंगलियों को कलाई पर रखना।

१० नाफ़ के नीचे हाथ बांधना।

११ सना पढ़ना।

किरअत की सात (७) सुन्नतें

१ तअ़व्वुज़ यानी अऊ़जु बिल्लाह पढ़ना।

२ तस्मिया यानी बिस्मिल्लाह पढ़ना।

३ चुपके से आमीन कहना।

४ फ़जर और जुहर में तिवाले मुफ़स्सल यानी सूरे हुजुरात से बुरूज तक, असर व इशा में औसाते मुफ़स्सल यानी सूर: बुरूज से सूर: लम यकुन तक और मग़रिब में क़िसारे मुफ़स्सल यानी सूरे इज़ा ज़ुलज़िलतिल से सूरे नास तक की सूरतें पढ़ना।

५ फ़जर की पहली रकअ़त को तवील (लम्बी) करना।

६ न ज़्यादा जल्दी पढ़ना न ज़्यादा ठहरकर बल्कि दरमियानी रफ़तार से पढ़ना।

७ फ़र्ज़ की तीसरी और चौथी रकअ़त में सिर्फ़ सूर: फ़ातिहा पढ़ना।

रुकूअ़ की आठ (८) सुन्नतें

१ रुकूअ़ की तकबीर कहना।

२ रुकूअ़ में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ना।

३ घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादा (विस्तृत) रखना।

४ पिंडिलयों को सीधा रखना।

५ पीठ को बिछा देना।

६ सर और सुरीन (श्रोण) को बराबर रखना।

७ रुकूअ़ में कम अज़ कम तीन बार सुबहान रब्बियल अज़ीम سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم कहना।

८ रुकूअ़ से उठने में इमाम को समिअ़ल्ला हुलिमन हमिदह और मुक़तदी को रब्बना लकल हम्द और मुनफ़रिद (अकेले पढ़ने वाले को) को दोनों कहना ।

सजदे की बारह (१२) सुन्नतें

१ सजदे की तकबीर कहना।

२ सजदे में पहले दोनों घुटनों को रखना।

३ फिर दोनों हाथों को रखना।

४ फिर नाक रखना।

५ फिर पेशानी रखना।

६ दोनों हाथों के दरमियान सजदा करना।

७ सजदे में पेट को रानों से अलग रखना।

८ पहलुओं को बाजुओं से अलग रखना।

९ कोहनियों को ज़मीन से अलग रखना।

१० सजदे में कम अज़ कम तीन बार "सुबहान रब्बियल अअ़ला" पढ़ना। سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی

११ सजदे से उठने की तकबीर कहना।

१२ सजदे से उठने में पहले, पेशानी,फिर नाक, फिर हाथों को, फिर घुटनों को उठाना और दोनों सजदों के दरमियान इतमीनान से बैठना।

क़अ़दे की तेरह (१३) सुन्नतें

१ दायें पैर को खड़ा रखना और बायें पैर को बिछाकर उस पर बैठना ।

२ और पैर की उंगलियों को क़िबले की तरफ़ रखना।

३ दोनों हाथों को रानों पर रखना।

४ तशह्हुद (अत्तहिय्यातु) में "अशहदु अल्लाइलाहा पर शहादत की उंगली को उठाना और इल्लल्लाह पर झुका देना।

५ क़अ़दा अख़ीरा में दरूद शरीफ़ पढ़ना।

६ दरूद शरीफ़ के बाद दुआए मासूरा उन अल्फ़ाज़ (शब्दों) में जो क़ुरान और हदीस के मुशाबह (समान) हों पढ़ना।

७ दोनों तरफ़ सलाम फेरना।

८ सलाम की दाहिनी तरफ़ से इबतिदा (शुरू) करना।

९ इमाम को मुक़्तदियों, फ़रिशतों और सालेह जिन्नात की नियत करना।

१० मुक़्तदी को इमाम व फ़रिशतों और सालेह जिन्नात और दायें बायें मुक़्तदियों की नियत करना।

११ मुनफ़रिद को सिर्फ़ फ़रिश्तों की नियत करना।

१२ मुक़्तदी को इमाम के साथ-साथ सलाम फेरना।

१३ दूसरे सलाम की आवाज़ को पहले सलाम से पस्त करना। (फ़ा०) रुकूअ़ में हाथ की उंगलियां फैली हुई हों और सजदे में यह उंगलियां मिली हुई होंगी।

९. औरतों की नमाज़ में खास फ़रक़

१ तकबीर तह्रीमा के वक़्त अपने दोनों हाथों को कंधे तक उठाये लेकिन हाथों को दुपट्टे से बाहर न निकाले।

२ सीने पर हाथ बांधे और सिर्फ़ दाहिने हाथ की हथेली को

बांये हाथ की पुश्त पर रख दे और दोनो बाज़ुओं को पहलू से ख़ूब मिलाये रहे और दोनों पैर के टख़नों को बिल्कुल मिला देवे।

३ सजदे में औरतें पांव न खड़ा करें, बल्कि दाहिनी तरफ़ को निकाल दें और ख़ूब सिमट कर और दबकर सजदा करें कि पेट दोनों रानों से और बाहें दोनों पहलुओं से मिला दें और दोनो को ज़मीन पर रख दें।

४ क़ऊ़दे में जब बैठें दोनों पांव दाहिनी तरफ़ निकाल दें और दोनों हाथों को रान पर रख दें और उंगलियां ख़ूब मिलाकर रखें।

१० नमाज़ के वह आदाब जो सबके लिये यकसां (समान) हैं

खड़े होने की हालत में सजदे की जगह पर और रुकूअ़ की हालत में पांव पर, सजदे की हालत में नाक पर और सलाम फेरते वक़्त कंधों पर नज़र रहे। और जमाई आये तो ख़ूब ताक़त से रोके और अगर न रुके तो दाहिने हाथ की पुश्त से रोके और जब खांसी का असर मालूम हो तो भी रोकने की कोशिश करे और ज़ब्त करे। सिर्री नमाज़ में इतनी आवाज़ से पढ़े कि ख़ुद सुन सके।

सलाम फेरकर एक बार अल्लाहु अक्बर कहे फिर तीन मरतबा

असतग़ फ़िरुल्लाह कहे आख़िरी बार खींच कर पढ़े।

११. हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़ें

१ "अल्लाहुम्म अंतस्सलामु व मिन कस्सलामु तबारकत या ज़लजलालि वल इकराम

फ़त्हुलक़दीर, जि०-१, पृ० ४३९

(इलाही तू ही सलामती वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती है, तू बड़ा बा बरकत है, बुज़ुरगी वाले।)

नोट: मुल्ला अ़ली क़ारी (र०) ने मिरक़ात जि० २ पृष्ठ २५८ पर लिखा है कि "इलैक यरजिउस्सलामु फ़हय्यिना रब्बना बिस्सलामि व अदख़िलना दारक दारस्सलामि फ़ला असल लहा बल मुख़्तलिक़ु बअ़्ज़िल क़िसास'' यानी इन जुमलों का सबूत नहीं मिलता, कुछ क़िस्सा गो लोगों का बढ़ाया हुआ है।

२ 'लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुलमुल्कु व लहुल हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। (अल्लाह के सिवा कोई मअ़्बूद नहीं है, वह अकेला है, कोई उसका साथी नहीं, उसी का सारा मुल्क है और उसी की सब तारीफ़ है और वही हर चीज़ पर क़ादिर है।)

३ "अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा अअ़्तै त वला मुअ़्तिय

लिमा मनअ़्त वला यनफ़उ ज़ल जद्दि मिनकल जद्दु।
(ऐ अल्लाह जो तू अ़ता फ़रमाये उसको कोई मना करने वाला नहीं और जो तू न दे उसका देने वाला कोई नहीं और किसी दौलतमंद को उसकी दौलत तेरी पकड़ से नहीं बचा सकती)

१२ खाने की चंद सुन्नतें

१ दस्तरख़्वान बिछाना।

२ दोनों हाथ गट्टों तक धोना।

नोट: अ़ल्लामा शामी (र०) के नज़दीक खाने से पहले कुल्ली करना सुन्नत नहीं है जिल्द-५, पृष्ठ-२३९, बाब किताबुल ख़तर वलइबाहत में एक सवाल के जवाब में 'कि किया अपने मुंह को खाने के लिए धोना मिस्ल (समान) हाथ धोने के सुन्नत है ? फ़रमाते हैं कि नहीं मगर हालते जिनाबत में बग़ैर कुल्ली किये हुये खाना मकरूह है इबारत मुलाहज़ा (देखिये) हो -" व हल ग़स्लु फ़मिही लिल अक्लि सुन्नतुन क ग़स्लि यदैहि ? जवाब: ला वलाकिन युकरहु लिलजुनुबि''। लेकिन अगर कोई मुंह की सफ़ाई के लिये कुल्ली करना चाहे तो मना नहीं।

३ बिस्मिल्लाह पढ़ना बुलन्द आवाज़ से। ---शामी जि० ५

४ दाहिने हाथ से खाना।

५ खाने की मजलिस में जो शख़्स सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग और बड़ा हो उससे खाना शुरू कराना।

६ खाना एक क़िस्म का हो तो अपने सामने से खाना।

७ अगर कोई लुक़मा गिर जाये तो उठा कर साफ़ करके खाना।

८ टेक लगाकर न खाना।

९ खाने में कोई ऐब न निकालना।

१० जूता उतारकर खाना।

११ खाने के वक़्त उकड़ू बैठना ताकि दोनों घुटनें खड़े हों और सुरीन ज़मीन पर हों या एक घुटना खड़ा हो और दूसरे घुटने को बिछाकर उस पर बैठे या दोनों घुटने ज़मीन पर बिछाकर क़अ्दे की तरह बैठे और आगे की तरफ़ ज़रा झुक कर बैठे।

१२ खाने के बाद बरतन व प्याला व प्लेट को साफ़ कर लेना इसलिए कि बरतन उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करता है।

१३ खाने के बाद की दुआ़ पढ़ना।
"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अतअ़मना व सक़ाना व जअ़लना मिनल मुसलिमीन'' (तमाम तारीफें अल्लाह के लिये हैं जिसने खिलाया और पिलाया और मुसलमानों में बनाया।)

१४ पहले दसतरख़्वान उठवाना फिर ख़ुद उठना।

१५ दसतरख़्वान उठाने की दुआ़ पढ़ना। "अल्हम्दु लिल्लाहि हमदन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीहि ग़ैर मुकफ़िफ़न व ला मुवद्दइन वला मुस्तग़नन अ़नहु रब्बना''
(सब तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं ऐसी तरीफ़ जो बहुत ही

६ इक़ामत का जवाब भी अज़ान की तरह दिया जायेगा लेकिन कदक़ामतिस्सलाह के जवाब में "अक़ामहल्लाहु व अदामहा" (अल्लाह नमाज़ को क़ायम और हमेशा रखे।)कहा जायेगा।

७ अज़ान ख़त्म होने के बाद दरूदशरीफ़ पढ़ना सुन्नत है।

८ दरूद शरीफ़ पढ़कर यह दुआ पढ़े "अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दवतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल वसीलत वलफ़ज़ीलत वबअ़सहू मक़ामम महमूदनिल्लज़ी व अत्तहू इन्नक ला तुख़लिफ़ुल मीआ़द।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَا نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ؕ

(ऐ अल्लाह ऐ परवर दिगार इस पूरी पुकार के और क़ायम होने वाली नमाज़ के हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स० को वसीलह और फ़ज़ीलत और बुलन्द दरजा अ़ता फ़रमाइये और उनको मुक़ामे महमूद में खड़ा कीजिये जिसका आपने उनसे वादा किया है और हमको क्यामत में उनकी शफ़ाअ़त से बहरा मन्द फ़रमाइये बेशक आप वादा खिलाफ़ी नहीं करते।)

नोट: "वद्द रजतर रफ़ीअ़त" का लफ़्ज़ और आख़िर में "या अरहमरराहिमीन" जो मशहूर है उसका सबूत रिवायत में नहीं है। मुल्ला अली क़ारी (र०) मिरक़ात जि० १६३ पर फ़रमाते हैं। "वद्दरजतर रफ़ीअ़त अलमुशतहिरतु अ़ला अलसिनति फ़क़ाल सख़ावी लम अराहुफ़ी शैइन मिनर रिवायति"

२५ मय्यत के रिश्तेदारों को खाना देना सुन्नत है।

२६ खाने के वक़्त बिल्कुल ख़ामोश रहना मकरुह है। (शामी) लेकिन ग़म फ़िक्र और मरज़ की बातें न करें।

शरह (व्याख्या) अबूदाऊद बज़ले-मजहूद-३५ पर लिखा है कि जब कोई शख़्स बिस्मिल्लाह कह कर अपने घर में दाख़िल होता है तो शैतान अपने भाइयों से कहता है कि ए भाइयो! "ला मबीत लकुम" तुम्हारे लिये इस घर के दरवाज़े बंद हो चुके हैं। शबबसरी (रात गुज़ारने) के लिये कोई और घर तलाश कर लो। और जब खाने के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ लिया जाता है तो शैतान कहता है लो अब खाने पर भी पाबंदी लग गई यानी न यहां रह सकते हो और न खा सकते हो और अगर बन्दा घर में दाख़िल होते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना भूल जाये तो उस वक़्त शैतान अपने भाइयों से कहता "अदरकतुमुलमबीत" तुमने घर पा लिया रात गुज़ारने के लिए और अगर वह बन्दा खाते वक़्त भी बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाये तो शैतान कहता है. "अदरकतुमुल मबीत वल अ़शा" यानी क़याम के साथ साथ तआ़म (खाने) की भी इजाज़त है।

१२ पीने की सुन्नतें

१ दाहिने हाथ से पीने का बर्तन पकड़ना।

२ पीने से पहले अगर खड़े हों तो बैठ जाना। खड़े होकर पीना मना है।

३ बिस्मिल्लाह कहकर पीना और पीकर अलहम्दुलिल्लाह कहना।

४ तीन सांस में पीना और सांस लेते वक़्त बर्तन को मुंह से अलग करना।

५ बर्तन के टूटे हुए किनारे की तरफ़ से न पीना।

६ मशक से मुंह लगा कर न पीना। या कोई भी ऐसा बर्तन हो जिससे दफ़अ़तन (अचानक) पानी ज़्यादा आ जाने का एह्तिमाल (शक) हो या अन्देशा हो कि इसमें कोई सांप या बिच्छू आ जाये।

७ सिर्फ़ पानी पीने के बाद ये दुआ पढ़ना भी मसनून है। "अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी सक़ाना अज़बन फ़ुरातन बिरह्मतिही माअन वलमयजअ़ल्हु बिज़ुनू बिना मिलहन उजाजा।

रूहुल मआ़नी पृष्ठ १४९०, पारा २७

८ पानी पीकर अगर दूसरों को देना है तो पहले दाहिने वाले को दें फिर इसी तरतीब (क्रम) से दौर (बारी) ख़त्म हो। इसी तरह चाय या शरबत भी पेश करें।

९ दूध पीने के बाद यह दुआ पढ़ें। "अल्लाहुम्म बारिकलना फ़ीहि वज़िदना मिन्हु" (ऐ अल्लाह तू इसमें हमें बरकत दे और हमको ज़्यादा दे)

१० पिलाने वाले को आख़िर में पीना ।

११ आबे ज़मज़म खड़े होकर पीना।

१२ वुज़ू का बचा हुआ पानी खड़े होकर पीना। इसमें बीमारियों के लिये शिफ़ा है अ़ल्लामा शामी (र०) ने लिखा है कि मैंने

बारहा (अक्सर) अपनी बीमारियों में उसका तजरबा किया है और शिफ़ा पाई है।

१४. लिबास की सुन्नतें

१ हुज़ूर (स०) को सफ़ैद रंग का कपड़ा पसंद था।

२ क़मीस कुरता या सदरी वग़ैरह पहनें तो पहले दायां हाथ आसतीन में डालें, फिर बायाँ हाथ इसी तरह पायजामा और शलवार के लिये पहले दायां पैर फिर बायां पैर।

३ पायजामा, शलवार या लुंगी टख़ने से ऊपर रखें। टख़ने से नीचे लटकाने से अल्लाह तआ़ला नाराज़ होता है। नबी करीम (स०) ने फ़रमाया तहबन्द टख़ने से नीचे लटकाने वाले पर अल्लाह तआ़ला नज़रे रहमत नहीं फ़रमायेगा।

४ नया कपड़ा पहनकर यह दुआ पढ़ें। "अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व रज़क़नीहि मिन ग़ैरि हौलिममिन्नी व ला क़ुव्वतिन। (शुक्र है अल्लाह जल्ल शा़नहू का जिसने मुझे यह कपडा पहनाया और बग़ैर मेरी ताक़त व क़ुव्वत के यह मुझको अ़ता फ़रमाया)।

५ अ़मामे के नीचे टोपी रखना सुन्नत है । बग़ैर टोपी के अ़मामा बांधना ख़िलाफ़े सुन्नत है।

६ सियाह साफ़ा बांधना मसनून है। शिमला (तुर्रा) छोड़ना भी सुन्नत है। शिमले की मिक़दार (लम्बाई) एक हाथ या इससे ज़्यादा भी साबित है।

७ कपड़े उतारते वक़्त बिस्मिल्लाह कहें और इबतिदा (शुरू)

बाईं जानिब से करें क़मीस या कुरता वग़ैरा उतारना हो तो पहले बायां हाथ आसतीन से निकालें फिर दाहिना हाथ । इसी तरह शलवार और पाइजामा उतारते वक़्त पहले बायां पैर बाहर निकालें फिर दाहिना।

८ जूता पहले दाहिने पांव फिर बायें पांव में पहनें।

९ उतारते वक़्त पहले बायें से फिर दाहिने पांव से उतारें।

१० नया जूता पहनकर यह दुआ पढ़ें। "अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक मिन ख़ैरिही व ख़ैरि मा हुव लहू व अऊज़ुबिक मिनशर्रिही व शिर्रि माहुव लहू।''
(ए अल्लाह मैं तुझ से इसकी भलाई और जिस ग़र्ज़ के लिये यह है उसकी भलाई का सवाल करता हूँ। और उसके शर (बुराई) से पनाह मांगता हूं और जिस ग़र्ज़ के लिये है उस के शर से पनाह मांगता हूँ)।

१५. बालों की सुन्नतें

१ नबी करीम (स०) के बालों की लम्बाई कानों के दरमियान तक और दूसरी रिवायात (कथन) के मुताबिक़ कानों तक और एक और रिवायत के मुताबिक़ कानों की लौ तक थी। इनके अलावा कंधों तक या कंधों के क़रीब तक होने की भी रिवायत है।

-शमाइले तिर्मिज़ी

२ या तो सारे सर के बाल रखे या सारा सर मुंडवाये। एक हिस्से के बाल रखना और एक हिस्से के बाल मुंडवाना या

तरशवाना मना है।

३ दाढ़ी को बढ़ाने और मूँछों को कम करने के मुतअ़ल्लिक़ (बारे में) हदीस में हुक्म वारिद (आगंतुक) है। दाढ़ी यकमुश्त (एक मुश्त) से कम कतरवाने और मुंडवाने को हराम फ़रमाया गया है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इससे महफ़ूज़ रखे।

४ मूंछों को कतरवाने में मुबालग़ा (अतिरंजना) करना सुन्नत है।

५ ज़ेरे नाफ़ (नाभि के नीचे) बग़ल और नाक के बाल काटना, चालीस रोज़ गुज़र जायें और सफ़ाई न करे तो गुनहगार होगा।

६ बालों को धोना, तेल लगाना और कंघा करना मसनून है। लेकिन एक आध दिन बीच में छोड़ देना चाहिए।

७ जब तेल डालने का इरादा हो तो बायें हाथ की हथेली में तेल लेकर पहले अबरुओं (भवों) पर फिर आँखों पर और फिर सर में तेल डालें।

८ सर में तेल डालने की इब्तिदा पेशानी से करें।

९ कंघा करें तो पहले दाहिनी तरफ़ से शुरु करें।

१० कंघा करते हुए या हसबे ज़रूरत (जैसी ज़रूरत हो) जब भी आइना देखें तो दुआ़ पढ़ें।"अल्लाहुम्म अंतहस्सन्त ख़लक़ी फ़हस्सिन ख़ुलुक़ी'' (ऐ अल्लाह आपने मेरी सूरत अच्छी बनाई मेरा अख़लाक़ भी अच्छा कर दे)

१६. नाख़ून काटने की सुन्नत

१ दाहिने हाथ की अंगुश्त (उंगली) शहादत (कलमा शहादत वाली उंगली) से शुरू करें और छुंगली तक फिर बायें हाथ की छुंगली से बायें हाथ के अंगूठे तक फिर आख़िर में दाहिने हाथ के अंगूठे का नाख़ून काटें।

और दाहिने पांव की छुंगली से शुरु करके अंगूठे तक फिर बायें पांव के अंगूठे से छुंगली तक तरतीबवार नाख़ुन काटना चाहिए। यही तरीक़ा हुज़ूर (स०) का नाख़ून काटने का शामी में मनक़ूल है। जिसकी इबारत (लेख) हवाले सहित नक़ल है।

रिवायत: رُوِیَ اَنَّهٗ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ بَدَأَ بِمُسَبِّحَتِهِ الْیُمْنٰی اِلَی الْخِنْصَرِ ثُمَّ بِخِنْصَرِ الْیُسْرٰی اِلَی الْاِبْهَامِ وَخَتَمَ بِاِبْهَامِ الْیُمْنٰی وَفِی الرِّجْلِ بِخِنْصَرِ الْیُمْنٰی وَیَخْتِمُ بِخِنْصَرِ الْیُسْرٰی

जो शख़्स जुमअ़े के दिन नाख़ून काटे अगले जुमअ़े तक की बलाओं से अल्लाह तआ़ला उसको पनाह देंगे। शामी ५/२८७

अ़िबारते शामी

مَنْ قَلَّمَ اَظَافِیْرَهٗ یَوْمَ الْجُمُعَةِ اَعَاذَهُ اللّٰهُ مِنَ الْبَلَایَا اِلَی الْجُمُعَةِ الْاُخْرٰی

शामी जि० ४/२८८

तम्बीह (चेतावनी) : हाफ़िज़ इबने हजर असक़लानी अ़ल्लामा इबने दक़ीकुल ऐद (र०) फ़रमाते हैं नाख़ून तराशने में कोई

ख़ास कैफ़ियत और किसी दिन का तअय्युन (निश्चित) हुज़ूर (स०) से मनक़ूल व साबित नहीं लिहाजा मज़कूरा बाला तरीके के मुस्तहब होने का एतिक़ाद जायज़ नहीं - बज़लुलमजहू द फ़ी हिल्लि अबि दाउद जि० १/३३

१७. कुफ़्र या गुनाह के वसाविस के वक़्त यह पढ़ना सुन्नत है

वसाविस (भ्रम) के वक़्त की सुन्नतें:

१. अऊज़ु बिल्लाहि मिनश शैता निर्रजीम'' (मैं अल्लाह की शैतान मरदूद से पनाह चाहता हूँ) पढ़े और आमन्तु बिल्लाहि व रुसूलिही, मिरक़ात जि०/१३७ (मैं तो ईमान ले आया अल्लाह और उसके रसूलों पर।)

२ दूसरी सुन्नत यह है कि ज़ात हक़ तआला में ग़ौर न करें । तफ़क्कुर (चिन्तन) का तअल्लुक़ ख़लक़ से है न कि ख़ालिक़ से। "कमा काल तआला शानुहू यतफ़क्करून फ़ि ख़ल्क़िस्समावाति वलअर्ज़ि। मसाइलुस्सुलूक (बयानुल क़ुरान)

१८. बीमारी, इलाज और अ़ियादत की सुन्नतें

१ बीमारी में दवा और इलाज करवाना मसनून है। इलाज कराता रहे मगर बीमारी की शिफ़ा में नज़र अल्लाह ही पर रखे।

२ कलोंजी और शहद के साथ इलाज करना सुन्नत है। हुज़ूर (स०) का इरशाद है कि अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों चीज़ों में शिफ़ा रखी है। इन दोनों की तारीफ़ में बहुत- सी हदीसें आई हैं।

३ इलाज के दौरान नुक़सान पहुँचाने वाली चीज़ों से परहेज़ करना।

४ अपने बीमार भाई की अ़ियादत (बीमार पुरसी) के लिये जाना सुन्नत है।

५ बीमार पुरसी करके जल्द लौट आना सुन्नत है। कहीं तुम्हारे ज़्यादा देर बैठने से बीमार मलूल (दुखित) और रंजीदा न हो जाये या घर वालों के काम में ख़लल न पड़े।

६ बीमार की हर तरह तसल्ली करना मसनून है। मसलन उससे यह कहे कि इनशाअल्ला तुम जल्द अच्छे हो जाओगे। ख़ुदा तआ़ला बड़ी क़ुदरत वाले हैं। कोई डर या ख़ौफ़ पैदा करने वाली बात बीमार से न कहे।

७ बीमार पुरसी रात में भी जायज़ है इसको जो लोग मनहूस कहते हैं वे ग़लती पर हैं।

इसी तरह बीमारी की ख़बर मिले तो जब दिल चाहे अ़ियादत कर आये। यह जो ख़्याल है कि तीन दिन बीमारी के गुज़र लें तो अ़ियादत को जायें बेअसल बात है।

८ जब किसी मरीज़ की अ़ियादत करें तो उससे यूं कहें "ला बास तुहूरुन इन्शाअल्लाह'' (कोई घबराने की बात नहीं यह बीमारी ज़ाहिरी और बातिनी आलूदगियों-गुनाहों से पाक करने वाली

है) फिर उसकी शिफ़ायाबी के लिये सात बार यह दुआ पढ़े। "असअलुल्लाहल अज़ीम रब्बल अरशिल अज़ीमि अंय्यशफीक (मैं ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर से दुआ करता हूं जो अरशे अज़ीम का मालिक है कि वह तुझे शिफ़ा दे दे।) हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया है कि सात मरतबा इसके पढ़ने से मरीज़ को शिफ़ा होगी हाँ अगर उसकी मौत ही आ गई हो तो दूसरी बात है।

१९. अज़ान व इक़ामत की सुन्नतें

१. अज़ान व इक़ामत क़िबले के रु (ओर) कहना सुन्नत है।

२ अज़ान के अलफ़ाज़ (शब्दों) को ठहर-ठहर कर अदा करना और इक़ामत के अल्फ़ाज़ जल्द-अज़-जल्द अदा करना सुन्नत है।

३ अज़ान में हय्य अलस्सलाह: और हय्य अललफ़लाह : कहते वक़्त दाहिनी आर बांई जानिब मुंह फ़ेरना सुन्नत है। लेकिन सीना और क़दम क़िबला रुख़ ही रहें।

४ जब अज़ान सुनो तो तिलावत, ज़िक्र व तस्बीह बन्द कर दो और अज़ान का ज्वाब दो यानी अज़ान के कलिमात को दोहराओ। जब मुअज़्ज़िन हय्य अलस्सलाह और हय्य अलल फ़लाह कहे तो जवाब में लाहौल वला क़ुव्वत: इल्लाबिल्लाहि कहो।

५ फ़जर की अज़ान में "अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौम" (नमाज़ सोने से बेहतर है।) के जवाब में "सदक़्त व बररत (बिशक तूने सच कहा) कहा जायेगा।

६ इक़ामत का जवाब भी अज़ान की तरह दिया जायेगा लेकिन कद्क़ामतिस्सलाह के जवाब में "अक़ामहल्लाहु व अदामहा" (अल्लाह नमाज़ को क़ायम और हमेशा रखे।)कहा जायेगा।

७ अज़ान ख़त्म होने के बाद दरूदशरीफ़ पढ़ना सुन्नत है।

८ दरूद शरीफ़ पढ़कर यह दुआ पढ़े "अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दवतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल वसीलत वलफज़ीलत वबअसहू मक़ामम महमूदनिल्लज़ी व अत्तहू इन्नक ला तुख़लिफ़ुल मीआद।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَتِ التَّآمَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ
اٰتِ مُحَمَّدَا الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا
اِلَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادِ ؕ

(ऐ अल्लाह ऐ परवर दिगार इस पूरी पुकार के और क़ायम होने वाली नमाज़ के हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स० को वसीलह और फ़ज़ीलत और बुलन्द दरजा अता फरमाइये और उनको मुक़ामे महमूद में खड़ा कीजिये जिसका आपने उनसे वादा किया है और हमको क्यामत में उनकी शफ़ाअत से वहरा मन्द फ़रमाइये बेशक आप वादा खिलाफ़ी नहीं करते।)

नोट: "वद्द रजतर रफ़ीअत" का लफ़्ज़ और आख़िर में "या अरहमरराहिमीन" जो मशहूर है उसका सबूत रिवायत में नहीं है। मुल्ला अली क़ारी (र०) मिरक़ात जि० १६३ पर फ़रमाते हैं। "वद्दरजतर रफ़ीअत अलमुशतहिरतु अला अलसिनति फ़क़ाल सख़ावी लम अराहुफ़ी शैइन मिनर रिवायति"

सफ़र की सुन्नतें

१ जहां तक हो सके कम अज़ कम दो आदमी सफ़र में जायें तन्हा आदमी सफ़र न करे।

२ सवारी के लिये रकाब में पांव रखें तो बिसमिल्लाह कहें।

३ सवारी पर अच्छी तरह बैठ जायें तो तीन मरतबा "अल्लाहु अक्बर" कहें। फिर यह दुआ पढ़ें।

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

'सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़रलना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन क़लिबून। (पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को क़ाबू में कर दिया हम तो उसको क़ाबू में नहीं ला सकते थे। और हम तो अपने रब के पास ही लौटकर जायेंगे)

४. फिर यह दुआ पढ़े- "अल्लाहुम्म हव्विन अ़लैना हाज़स्सफ़र व अतवि अन्ना बुअदहू अल्लाहुम्म अन्तस्साहिबु फ़िस्सफ़रि वल ख़लीफ़तु फ़िल अहलि अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबिक मिंवव असाइस्सफ़रि वकाबतिल मनज़रि व सूइल मुनक़लबि फ़िलमालि वल अहलि वलवलद।

اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا هٰذَا السَّفَرَ وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْٓءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ

(ऐ अल्लाह आसान कर दीजिये हम पर इस सफ़र को और

तय कर दीजिये हम पर दराज़ी इसकी ऐ अल्लाह आप ही रफ़ीक़े सफ़र हैं। सफ़र में, और ख़बरगीरी में घर बार की। या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ आपकी, सफ़र की मुशक़्क़त से और बुरी हालत देखने से और वापस आकर बुरी हालत पाने से माल में और घर में और बच्चों में)

५ मुसाफ़रत में ठहरने की ज़रूरत पेश आ जाये तो सुन्नत यह है कि रास्ते से हट कर क़याम करें। रास्ते में पड़ाव न डालें कि आने जाने वालों का रास्ता रुके और उनको तकलीफ़ हो।

६ सफ़र के दौरान जब सवारी बुलंदी पर चढ़े तो तीन मरतबा अल्लाहु अक्बर कहें।

७ जब सवारी नशेब (ढलाव) या पसती में उतरने लगे तो तीन बार सुबहानल्लाह कहें।

८ जिस शहर या गांव में जाने का इरादा हो उसे जब दूर से देख लें तो तीन बार यह दुआ पढ़ें। "अल्लाहुम्म बारिकलना फ़ीहा" (ऐ अल्लाह बरकत दे हमें इस शहर में)

९ और जब उस शहर में दाख़िल होने लगें तो यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَا اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِىْ اَهْلِهَا اِلَيْنَا

"अल्लाहुम्म र ज़ु क़ना जनाहा व हब्बिबना इला अह्लिहा व हब्बिब सालिही अह्लिहा इलैना" (या अल्लाह नसीब कीजिये हमें समरात इसके और अज़ीज़ कर दीजिये हमें अहले शहर के नज़दीक और मुहब्बत दीजिये हमें इस शहर के नेक लोगों की।)

१० रसूलुल्लाह (स०) का इरशाद है कि जब सफ़र की ज़रूरत पूरी हो जाये तो अपने घर लौट आये। बाहर सफ़र में बिलाज़रूरत (बग़ैर ज़रूरत) ठहरना अच्छा नहीं।

११ दूर दराज़ के सफ़र से बहुत दिनों बाद लौटे तो सुन्नत यह है कि अचानक घर में दाख़िल न हो बल्कि अपने आने की ख़बर करे और कुछ देर बाद घर में दाख़िल हो। ऐसे ही ज़्यादा रात गये अगर देर से घर आये तो उसी वक़्त घर में न जाऐ बल्कि बहतर है कि सुबह मकान में जाये अलबत्ता अहले ख़ाना(घरवाले) तुम्हारे देर से आने से आगाह हों। और उनको तुम्हारां इन्तिज़ार भी हो तो उसी वक़्त घर में दाख़िल होने में कोई हरज नहीं। इन मसनून तरीक़ों पर अ़मल करने से दीन व दुनिया की भलाई हासिल होगी।

१२ सफ़र में कुत्ता और घुंघरु (भालु) साथ रखने की मुमानअ़त (मनाही) आई है क्योंकि इनकी वजह से शैतान पीछे लग जाता है। और सफ़र की बरकत जाती रहती है।

१३ सफ़र से लौट कर आने वाले के लिये यह मसनून है कि घर में दाख़िल होने से पहले मस्जिद में जाकर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े।

१४ जब सफ़र से वापस आये तो यह दुआ पढ़े।
'आइबून ताइबून आ़बिदून लिरब्बिना हामिदून (हम लौटने वाले हैं। तौबा करने वाले हैं अल्लाह की बंदगी करने वाले हैं अपने रब की हम्द करने वाले हैं।)

२१ निकाह की सुन्नतें

१ मस्नून निकाह वह है जो सादा हो जिसमें हंगामा या ज़्यादा तकल्लुफ़ात (आड़बरों) और दहेज वग़ैरा के सामान का झगड़ा न हो।

२ निकाह के लिये सालिह नेक फ़र्द (व्यक्ति को) तलाश करना और मंगनी या पैग़ाम भेजना मस्नून है।

३ जुमूअ़े के दिन मस्जिद में और शव्वाल के महीने में निकाह करना पसंदीदा और मसनून है।

४ निकाह को मशहूर करना और निकाह के बाद छुवारे या खजूर लुटाना या तक़सीम करना सुन्नत है।

५ हस्बे इस्तिताअ़त (क्षमता के अनुसार) महर मुक़र्रर (नियुक्त) करना सुन्नत है।

६ शादी की पहली रात जब बीवी से तनहाई हो तो बीवी की पेशानी के ऊपर के बाल पकड़कर यह दुआ़ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَهَا وَخَیْرَ مَا فِیْهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरहा व ख़ैरमाफ़ीहा व अऊ़ज़ु बिक मिन शर्रिहा व शर्रि मा फ़ीहा''। (ऐ अल्लाह मैं तुझ से इसकी भलाई का और जिस ग़रज़ के लिये यह है उसकी भलाई का सवाल करता हूँ और उसके शर(बुराई) से और जिस ग़रज़ (ज़रूरत) के लिये यह है उसके शर से पनाह मांगता हूं)।

७ जब बीवी से सोहबत (संभोग) का इरादा करे तो यह दुआ़ पढ़ ले वरना शैतान का नुतफ़ा (वीर्य) भी मर्द के नुतफ़े के साथ अंदर चला जाता है और औलाद शैतान की ख़सलतों में मुबतला (ग्रस्त) होगी। दुआ़ यह है

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّیْطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّیْطٰنَ مَا رَزَقْتَنَا

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निबनश शैतान वजन्निबिश शैतान

मा रज़क़तना'' (मैं अल्लाह का नाम लेकर यह काम करता हूं। ऐ अल्लाह हम को शैतान से बचा और जो औलाद तू हम को दे उसको भी शैतान से दूर रख) इस दुआ को पढ़ लेने से जो औलाद होगी उसको शैतान कभी नुक़सान न पहुंचायेगा।

८ वलीमा: शबे उरुसी (शादी की पहली रात) गुज़ारने के बाद अपने अज़ीज़ों दोस्तों रिश्तेदारों और मसाकीन को वलीमे का खाना खिलाना सुन्नत है। वलीमे के लिये ज़रूरी नहीं है कि बड़े पैमाने पर खाना तैयार कर के खिलाये थोड़ा खाना हस्बे इस्तिताअ़त (क्षमता के अनुसार) तैयार करके दोस्तों अज़ीज़ों वग़ैरा को थोड़ा थोड़ा खिलाना भी अदायगी-ए-सुन्नत के लिये काफ़ी है। बहुत ही बुरा वलीमा वह है कि मालदार व दुनिया दार लोगों को तो बुलाया जाये मगर ग़रीब मसाकीन मोहताज और दीनदार लोगों को धुत्कार दिया जाये ऐसे बुरे वलीमे से बचना चाहिए।वलीमे में अदायगी-ए-सुन्नत की नियत रखो। दीनदार ग़रीब और मोहताज लोगों को बुलाओ अमीरों में से भी जिसको दिल चाहे बुलाओ मगर ग़रीबों को धक्के न दो जो वलीमा नामवरी और दिखावे के लिये या लोगों की तारीफ़ के लिये किया जाये उसका कुछ सवाब नहीं बल्कि नामवरी से अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और गुस्से का अंदेशा है।

९ मरदों के लिये साढ़े चार माशा वज़न से कम की चांदी की अंगूठी पहनने की इजाज़त है और सोने की अंगूठी मरदों के लिय बिल्कुल हराम है। औरतों को मेहंदी इस्तिमाल करना सुन्नत है।

२२ मौत और उसके बाद की सुन्नतें

१ जब यह मालूम होने लगे कि मौत का वक़्त क़रीब है तो उस वक़्त जो लोग मौजूद हों उसका मुंह क़िबले की तरफ़ फेर दें।

-मुसतदरक हाकिम

२ जब मौत क़रीब मालूम हो तो यह दुआ पढ़े "अल्लाहुम्मग़फ़िरली वरहमनी वलहिक़नी बिर्रफ़ीक़िलआला" (ऐ अल्लाह मुझ को बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे ऊपर वाले साथियों में पहुंचा दे।) बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी

३ जब रूह निकलने के आसार महसूस हों तो यह दुआ पढ़े "अल्लाहुम्म अइन्नी ग़मरातिल मौति व स का रातिल मौत (ऐ अल्लाह मौत की सख़्तियों के मौक़े पर मेरी मदद फ़रमा)

-तिरमिज़ी

४ जब मौत वाक़े हो जाये तो अहले तअल्लुक़ यह दुआ पढ़ें। "इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" अल्लाहुम्म अजिरनी फ़ी मुसीबती वख़लिफ़ली ख़ैरम मिन्हा"

-मुस्लिम

(बेशक हम अल्लाह ही के लिये हैं और हम अल्लाह ही की तरफ़ लौटने वाले हैं। ऐ अल्लाह मेरी मुसीबत में अजर दे और उसके इवज़ (बदले) मुझको उससे अच्छा बदला इनायत फ़रमा।)

५ रूह निकल जाने के बाद मय्यत की आंखें बन्द कर दें।

६ जो शख़्स मय्यत को तख़्त पर रखने के लिये उठाये या जनाज़ा उठाये तो बिस्मिल्लह कहे। -इबने अबी शयबा

७ मय्यत के दफ़न करने में जल्दी करना सुन्नत है।

-सुनने अबूदाऊद

८ जब मय्यत को क़ब्र में रखें तो यह दुआ पढ़ें "बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम"

-बहिश्ती ज़ेवर

९ मय्यत को क़ब्र में दाहिनी करवट पर इस तरह लिटाना चाहिए कि पूरा सीना काबे की तरफ़ हो और पुश्त को क़ब्र की दीवार से लगा दें। आजकल लोग सिर्फ़ मुंह काबे की तरफ़ कर देते हैं और चित लिटा देते हैं। कि सीना आसमान की तरफ़ होता है। यह बिल्कुल ख़िलाफ़े सुन्नत है।

१० मय्यत के रिश्तेदारों को खाना देना मसनून है इस खाने को तमाम बिरादरी या रिश्तेदारों को खाना जायज़ नहीं। मय्यत वालों के खाने में जो शरीक हैं उनके लिये यह खाना जायज़ है। नामवरी और दिखलावे के लिये ऐसा करना जायज़ नही, जो मौजूद हो दे दिया जाये। -जामिअ़ तिर्मिज़ी इबने माजा

११ क़ब्र को न बहुत ऊंची करें और न पुख़्ता (मज़बूत) बनाऐं।

१२ जब मय्यत के दफ़न से हुज़ूर (स०)फ़ारिग़ होते तो ख़ुद भी दुआ करते और दूसरों के लिये भी फ़रमाते कि अपने भाई के लिये इस्तिग़फ़ार करो और साबित क़दम रहने की दुआ करो कि अल्लाह उसे मुनकर नकीर के जवाब में साबित क़दम रखे।

१३ क़ब्र पर पानी छिड़कना सुन्नत है।

-अबूदाऊद हाकिम, बैहक़ी

२३. सोने की सुन्नतें

१ नबी करीम (स०) से इन तमाम चीजों पर इस्तिराहत (लेटना) फ़रमाना साबित है।
१. बोरिया, २. चटाई, ३. कपड़े का फ़र्श, ४. ज़मीन, ५. तख़्त, ६. चारपाई, ७. चमड़ा और खाल —ज़ादुलमआ़द

२ बा वुज़ू सोना सुन्नत है। —अबूदाऊद

३ जब अपने बिस्तर पर आये तो उसे अपने कपड़े के किनारे से झाड़ना सुन्नत है। —सिहाहेसित्ता

४ सोने से पहले दूसरे कपड़े तबदील करना सुन्नत है। —ज़ादुल मआ़द

५ सोने से पहले "बिस्मिल्लाह" कहते हूए दरज ज़ेल उमूर अन्जाम दे। १. दरवाज़ा बंद करे, २. चिराग़ बुझा दे, ३. मशकीज़े का मुंह बांधे, ४. बर्तन ढांक दे और अगर उस वक़्त ढांकने के लिये कुछ न मिले तो बर्तन के मुंह पर (चौड़ाई में) एक लकड़ी ही रख दे। —सिहाहेसित्ता

६ इशा की नमाज़ के बाद क़िस्सा कहानियों की मुमानअ़त है। नमाज़ पढ़कर सो रहना चाहिए। अल्बत्ता वअ़ज़ व नसीहत के लिये या रोज़ी मआ़श के लिये जागने की इजाज़त है।

७ सोते वक़्त हर आंख में तीन सलाई सुरमा लगाना औरत और मर्द दोनों के लिये मसनून है।

८ जब सोने का इरादा हो तो क़ुरआन शरीफ़ की आयात और सूरतें

पढ़ो मसलन-अलहम्दु शरीफ़, आयतुल कुर्सी, सूरः मुल्क (तबारकल्लज़ी) चारों क़ुल और दुरूद शरीफ़ अगर ज़्यादा न पढ़ सको तो दो एक सूरत ज़रूर पढ़ लो कि यह दुनिया व आख़िरत की भलाई और नेक बख़्ती की बुनियाद है।

९ सोने से पहल तस्बीहे फ़ातिमा (रज़ि०) का एहतिमाम करे यानी सुब्हानल्लाह ३३ बार अलहम्दुलिल्लाह ३३ बार और अल्लाहु अक्बर ३४ बार पढ़े। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

१० सोते वक़्त दाहिनी करवट पर क़िब्ला रु सोना मसनून है पट इस तरह से कि सीना ज़मीन की तरफ़ और पीठ आसमान की तरफ़ हो मना है क्योंकि इस तरह शैतान सोता है।

११ बिस्तर पर लेटकर यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्म बिइसमिक वज़अ्तु ज़म्बी व बिक अर्फ़ उहु इन अमसकत नफ़सी फग़फ़िर लहा व इन अरसलतहा फ़हफ़ज़ हा बिमा तह फ़ज़ु बिहि इबादकस्सालिहीन (सिहाहे सित्ता) तेरे ही नाम के साथ मैंने बिस्तर पर अपना पहलू रखा है और लेटा हूं और तेरे ही नाम से उठूंगा अगर तू मेरी जान को रोक ले और सोते में रूह क़ब्ज़ कर ले तो उसकी मग़फ़िरत कर दीजिये और अगर तू उसको छोड़ दे (और ज़िन्दा उठाये) तो उंसकी ऐसी ही हिफ़ाज़त कीजिये जैसे कि तू अपने नेक बंदों की हिफ़ाज़त करता है।

१२ फिर यह दुआ पढ़े।

"अल्लाहुम्म बिइसमिक अमूतु व अह्या''

-बुख़ारी, मुस्लिम

(ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम पर मरुंगा और तेरे ही नाम जीता हूं।)

१३ सोने से पहले तीन बार इस्तिग़फ़ार भी पढ़े:

"असतग़ फ़िरुल्ला हल्लज़ी ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबुइलैहि। -तिरमिज़ी

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

(मैं उस अल्लाह से मग़फ़िरत का तलबगार हूं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं) वह (हमेशा हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और क़ायम रखने वाला है और मैं उसकी तरफ़ लौटता हूं (तौबा करता हूं) अगर ख़्वाब में कोई डरावनी बात नज़र आ जाये और आँख खुल जाये तो"अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनशशैतानिररजीम'' (मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगता हूं) तीन बार पढ़कर बाईं तरफ़ थुथकार दो और करवट बदल कर सो जाओ। अगर किसी को फ़ुरसत मयस्सर हो तो इत्तिबाए सुन्नत में दोपहर को कुछ देर लेट जाना सुन्नत है। नींद आये या न आये।

२४ जुमअ़े के दिन के नौ (9) आमाल

जिन पर अ़मल करने से एक साल के रोज़े और एक साल की नमाज़ का सवाब हर क़दम पर मिलता है।

१ सुबह को और दिनों से कुछ पहले उठना।

२ ग़ुसल करना।

३ साफ़ कपड़े पहनना
४ मस्जिद में जल्द अज़ जल्द जाने की फ़िक्र करना।
५ मस्जिद पैदल जाना।
६ इमाम के क़रीब बैठने की कोशिश करना।
७ अगर सफ़ें पुर हों तो सफ़ों को फांद कर आगे न बढ़ना।
८ अपने कपड़ों से या बालों से लह्व व लअ़ब (खेल-कूद) न करना।
९ ख़ुतबे को ग़ौर से सुनना।

अलावा अज़ीं (इसके सिवा)जुमअ़े के दिन जो सूरेह कहफ़ पढ़ेगा उसके लिये अ़र्श के नीचे से आसमान के बराबर एक नूर ज़ाहिर होगा। जो क्यामत के अंधेरे में उसके काम आयेगा। और इस जुमअ़े से पहले जुमअ़े के तमाम ख़ताया सग़ीरा (छोटे गुनाह) उसके माफ़ हो जायेंगे। नबी करीम (स०) का इरशाद है कि जुमअ़े के दिन मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करो इस रोज़ दरूद में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और दरूद मेरे हुज़ूर पेश किया जाता है।

-इबने माजा

२५. मुआशरत की सुन्नतें

१ सलाम करना मुसलमानों के लिये बहुत बड़ी सुन्नत है। हुज़ूर (स०) ने इसकी बहुत ताकीद फ़रमाई है । हर मुसलमान को सलाम करना चाहिए। ख़्वाह इसे पहचानता हो या न हो। क्योंकि सलाम इस्लामी हक़ है किसी के जानने और शनासाई (जान पहचान) पर मौक़ूफ़ (निभर्र) नहीं।

२ बुख़ारी और मुस्लिम की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (स०) का गुज़र बच्चों पर हुआ तो उनको सलाम किया इसलिये बच्चों को भी सलाम करना सुन्नत है।

३ सलाम करने का सुन्नत तरीक़ा यह है कि ज़बान से अस्सलामु अ़लैकुम कहे हाथ से या सर से या उंगली के इशारे से सलाम करना या उसका जवाब देना -सुन्नत- के ख़िलाफ़ है।

४ किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात हो तो सलाम के बाद मुसाफ़ह करना मसनून है। -औ़रत से औ़रत मुसाफ़ह कर सकती है।

५ किसी मजलिस में जाओ तो जहां मौक़ा मिले और जगह मिले बैठ जाओ दूसरों को उठाकर ख़ुद बैठ जाना गुनाह की बात और मकरूह है।

६ अगर कोई शख़्स मजलिस में आये और जगह न हो तो पहले से बैठने वालों को चाहिए कि ज़रा मिलकर बैठ जायें और आने वाले मोमिन भाई के लिये गुंजाइश निकाल लें।

७ कहीं अगर सिर्फ़ तीन आदमी हों तो एक को छोड़कर काना फूंसी (सरगोशी) की इजाज़त नहीं कि ख़्वाह मख़्वाह उसका दिल (शुब्हात की वजह से) रंजीदा होगा और मुसलमान भाई को रंजीदा करना बहुत बड़ा गुनाह है।

८ किसी के मकान पर जाना हो तो उससे इजाज़त (आज्ञा) लेकर दाख़िल होना चाहिए।

९ जब जमाई आवे तो सुन्नत है कि मुंह बंद कर ले और मुंह पर हाथ रख ले और हा हा की आवाज़ न निकाले यह हदीस में ममनूअ़ (मना) है।

१० अगर किसी का अच्छा नाम सुनो तो उसे अपने मक़सद के लिये नेक फ़ाल समझना सुन्नत है और उसे ख़ुश होना भी सुन्नत है। बदफ़ाली लेने को सख़्त मना फ़रमाया गया है। जैसे रास्ते में चलते-चलते किसी को छींक आई तो यह समझना कि काम न होगा या कव्वा बोला, या बन्दर नज़र आये, या उल्लू बोला, तो इनसे आफ़त आने का गुमान करना सख़्त नादानी और बिलकुल बे असल और ग़लत और गुमराही का अक़ीदा (विश्वास) है इसी तरह किसी को मनहूस समझना या किसी दिन को मनहूस समझना बहुत बुरा है। सुन्नत पर अमल करने से बन्दा अल्लाह तआला का महबूब हो जाता है। इसलिये एहतिमाम से इस पर अमल करना चाहिए।

२६. बुलन्दी (ऊँचाई) पर चढ़ने और नीचे उतरने की सुन्नतें

१ जब बुलन्दी पर चढ़े ख़्वाह एक ही दो सीढ़ी मस्जिद की हों या अपने घर की हों तो बुलन्दी की तरफ़ दाहिना पांव बढ़ाये और अल्लाहु अकबर कहे।

२ इसी तरह जब नीचे को उतरे तो बायां पांव आगे बढ़ाये और सुबहानल्लाह कहे। ख़्वाह यह नशेब (ढलाव) मामूली भी हो तो भी इस सुन्नत का सवाब हासिल करे।

२७. सलाते इस्तिख़ारा

१ हुज़ूर स० इस्तिख़ारे की दुआ इस तरह से अपने असहाब (रज़ि०) (सहाबियों)को सिखाते थे जिस तरह क़ुरआन पाक की सूरतों को याद कराते थे। हज़रत अनस रज़ि० से फ़रमाया कि ऐ अनस रज़ि० जब तुम को कोई काम तरददुद (शुबह) में डाल दे तो अपने रब स इस्तिख़ारा करो और सात मरतबा इस्तिख़ारा करो फिर दिल में जो बात ग़ालिब आ जावे इसमें ख़ैर समझो। –शामी जि० १

फ़ायदा: किसी ख़्वाब (स्वपन) का नज़र आना या किसी आवाज़ का सुनाई देना ज़रूरी नहीं। इसी तरह दूसरों से इस्तिख़ारा कराना साबित नहीं। दूसरों से मशवरा लेना सुन्नत है। हदीसे पाक में है जो मशवरे से काम करता है नादिम (शरमिंदा) नहीं होता और जो इस्तिख़ारा करके करता है वह नामुराद नहीं होता।

फ़ायदा: बअज़ मशाइख़ से मनक़ूल (उक्त) है कि रात को इस्तिख़ारा करके क़िबला रू वुज़ू करके सो जाये फिर अगर, ख़्वाब में सफ़ेद रंग या हरे रंग की कुछ चीज़ें नज़र आयें तो उसमें ख़ैर समझे और अगर सियाह रंग की कुछ चीज़ें नज़र आयें तो उस में शर (बुराई) समझे।

फ़ायदा: नमाज़ इस्तिख़ारा पढ़ने का मौक़ा न हो और जल्दी से किसी अमर (काम) में इस्तिख़ारा करना हो तो सिर्फ़ दुआये इस्तिख़ारा काफ़ी है और अगर यह दुआ इस्तिख़ारा की याद न हो तो मुख़्तसर यह दुआ करे। "अल्लाहुम्म ख़िरली वख़्तरली"

शामी जि० १

२८ दुआए इस्तिख़ारा

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ
وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ
وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ
تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَمَعَاشِىْ وَعَاقِبَةِ
اَمْرِىْ فَاقْدِرْهُ وَيَسِّرْهُ لِىْ ثُمَّ بَارِكْ لِىْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ
اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَمَعَاشِىْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ فَاصْرِ
فْهُ عَنِّىْ وَاصْرِفْنِىْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِىَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِىْ بِهٖ

अल्लाहुम्म इन्नी असतख़ीरुक बिइलमिक व असतक़दिरुक बि क़ुदरति क व अस्अलु क मिन फ़ज़लिकल अज़ीमि फ़इन्नक तक़दिरु वला अक़दिरु व तालमु वला आलामु व अन्त अल्लामुल्ल ग़ुयूबि अल्लाहुम्म इन कुन्त तालुम अन्न हाज़ल अमर (इस जगह अपने मतलब व काम

का ख़्याल करें)

"ख़ैरल्ली फी दीनी व मआशी व आक़िबति अमरी फक़दिरहु ली व यस्सिरहु ली सुम्म बारिक ली फीहि व इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अमर (इस जगह अपने मतलब का ख़्याल करें) शर्रल्ली फी दीनी वमआशी व आक़िबति अमरी फसर्रिफहु अन्नी वस्रिफ़नी अन्हु वक़दिरलियल ख़ैर हैसु का न सुम्म अर ज़िनी बिही''। (ऐ अल्लाह मैं ख़ैर तलब करता हूं आपकी क़ुदरत की मदद से और सवाल करता हूं आपके फ़ज़ल से इसलिए बेशक आप क़ुदरत रखने वाले हैं। और मैं आजिज़ (निर्बल) और कमज़ोर हूं और आप जानते हैं मैं नहीं जानता और आप अल्लामुलग़ुयूब (ग़ैब-भविष्य के जानने वाले हैं)। ऐ अल्लाह अगर यह बात जो हमारे दिल में है आपके इल्म में ख़ैर है तो इस को हमारे लिये हमारे दीन और मआश और अन्जाम कार में तो इसको हमारे लिये मुक़द्दर कर दीजिए और आसान कर दीजिए और अगर आपके इल्म में इसके अन्दर शर है हमारे दीन और मआश और अन्जाम कार में तो उसको हमसे दूर कर दीजिये और मुझको उससे दूर कर दीजिये और जहां ख़ैर हो उसको हमारे लिये मुक़द्दर कर दीजिये और हमको उससे राज़ी कर दीजिये।

इस दुआ के बाद जो दिल में ख़्याल ग़ालिब हो जावे उसमें ख़ैर है।

२९. सलातो (नमाज़े) हाजत (ज़रूरत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी ओफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने इरशाद फ़रमाया कि जिसको कोई ज़रूरत अल्लाह तआला से

पेश आये तो वह वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे फिर दो रकआत नमाज़ अदा करे फिर हक़ तआला की सना (तारीफ़) करे और दरूद शरीफ़ पढ़े फिर यह दुआ पढ़े।

"लाइलाह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीमु सुबहानल्लाहि रब्बिल अरशिल अज़ीम अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक मूजिबाति रह्मतिक व अज़ाइममग़फ़िर तिक वलग़नीमत मिनकुल्लि बिर्रिन वस्सलामत मिनकुल्लि इसमिन ला तदअ़ ली ज़म्बन इल्ला ग़फ़रतहू वला हम्मन इल्ला फ़र्रज तहू वलाहाजतन हिय लक रज़न इल्ला क़ज़ैतहा या अरहमर्राहिमीन।

-तिर्मिज़ी, शामी जि० १

इसके बाद दुनिया व आख़िरत की हर हाजत का सवाल करे जो चाहे अल्लाह तआला क़ादिरे मुतलक़ है।

(नहीं है कोई माबूद सिवाये अल्लाह तआला के जो हलीम और करीम है।) "अलहलीमुल्लज़ी लायुअ़ज्जलु बिल्उक़ूबति अलकरीमु अल्लज़ी युअ्ती बिदूनि इसतिहक़ाक़िन व मन्निहि" हलीम वह ज़ात है जो सज़ा देने में जल्दी न करे और करीम वह ज़ात है जो बदून इसतिहक़ाक़ (अधिकार) और क़ाबिलियत अ़ता करे। पाक है अल्लाह अर्शे अज़ीम का रब है हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिये ख़ास है। ऐ अल्लाह मैं सवाल करता हूं आपकी रहमत के मूजिबात का (वाजिब करने वाले) और आपकी मग़फ़िरत के इरादों का और हर नेकी के माले ग़नीमत (सराहनीय) का और हर बुराई से सलामती का हमारे किसी गुनाह को न छोड़िये मगर बख़्श दीजिये और न हमारा कोई ग़म बाक़ी रखिये मगर इसको दूर फ़रमा दीजिये

और हमारी हर हाजत को जिससे आप राज़ी हों उसको पूरी कर दीजिये।

फ़ायदा: हर दुआ के पहले और बाद दरूद शरीफ़ पढ़ लेना दुआ की क़बूलियत का निहायत (अत्यंत) क़वी ज़रिआ है।

अ़ल्लामा शामी र० फ़रमाते हैं कि अ़ल्लामा अबू इसहाक़ अश्शाबती र० ने फ़रमाया "अस्सलातु अ़ला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुजाबतून अ़लल क़तइ।"

यानी दरूद शरीफ़ को हक़ तआ़ला शानुहू मक़बूल फ़रमा लेते हैं और करीम से यह बईद (दूर) है कि बअ़्ज़ दुआ़ को क़बूल करे और बअ़्ज़ को रद कर दे "फ़इन्नल करीम ला यसतजीबु बअ़्ज़ ददुआ़इ व यरुद्दु बअ़्ज़हू और अ़ल्लामा अबू सुलैमान दुर्रानी फ़रमाते हैं कि दुआ़ से क़बल और बाद दरूद शरीफ़ पढ़ने वाली दुआ़ क़बूल हो जाती है क्योंकि हक़ तआ़ला सिर्फ़ आगे और पीछे की दुआऐं क़बूल फ़रमा लें और दरमियान की दुआ़ को रद कर दें यह उन के करम से बईद (दूर) है।

अहक़र (छोटा) अर्ज़ करता है कि जब भी कोई परेशानी दुनिया या आख़िरत की आवे जिसमानी मुसीबत हो या रूहानी मुसीबत यानी मासियत (पाप) के तक़ाज़े परेशान करें। दो रक्आ़त नमाज़ हाजत पढ़कर मज़कूरा (उपर्युक्त) दुआ़ को पढ़कर बार-बार हर रोज़ दिल से दुआ़ करे ग़ैब से असबाब सामान फ़लाह कामयाबी पैदा होंगे जिसका दिल चाहे अपने रब से नुसरत (मदद) और करम का इनाम हासिल करे।

३०. मुतफ़र्रिक़ सुन्नतें

१ जब आप स० चलते थे लोगों को आगे से हाटाया नहीं जाता था।

२ आप स० जायज़ काम को मना नहीं फ़रमाते थे अगर कोई सवाल करता और उसके सवाल को पूरा करने का इरादा होता तो हाँ कह देते वरना ख़ामोश हो जाते।

३ आप अपना चेहरा क़िसी से न फेरते जब तक वह न फेरता और अगर कोई चुपके से बात कहना चाह्ता तो आप उसकी तरफ़ कान कर देते और जब तक वह फ़ारिग़ नहीं होता आप कान नहीं हटाते।

४ जब आप को छींक आती तो हाथ या कपड़ा मुंह पर रख लेते और आवाज़ को पस्त (नीचा) फ़रमाते।

५ जब आप किसी को रुख़सत फ़रमाते तो यह दुआ देते . . . "असतौदिउ़ल्लाह दीनकुम वअमानतकुम व ख़्वातीम आ़मालिकुम"

६ जब आँहज़रत स० को कोई मुश्किल पेश आती तो फ़रमाते "अल्हमदु लिल्लाहि ल्लज़ी बि निअ़मतिही ततिम्मुस्सालिहातु" और जब ना गवारी (अप्रिय) की हालत पेश आती तो फ़रमाते "अल्हमदु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हाल"

७ जब कोई मिलता तो पहले आप स० सलाम फ़रमाते थे।

८ जब किसी चीज़ को करवट की तरफ़ देखते तो पूरा चेहरा फेरकर देखते मुतकब्बिर (गर्वपूर्ण) की तरह कन अखियों से न देखते।

९ निगाह नीची रखते थे ग़ायते हया (सीमित लज्जा) की वजह से निगाह भर न देखते थे।

१० बरताव में सख़्ती न फ़रमाते नरमी को पसन्द फ़रमाते ।

११ हुज़ूर स० चलते वक़्त पांव उठाते तो क़दम क़ुव्वत (ताक़त) से उखड़ता था और क़दम इस तरह रखते थे कि ज़रा आगे को झुक जाते तवाज़ो (आदर) के साथ बढ़ाकर चलते थे गोया बुलन्दी से पसती में उतर रहे हों ।

१२ सब में मिले जुले रहते थे (यानी शान बनाकर न रहते थे) बल्कि कभी-कभी मज़ाह (मज़ाक़) भी फ़रमा लिया करते थे।

१३ अगर कोई ग़रीब आता या बुढ़िया आप स० से बात करना चाहती तो सड़क के एक किनारे पर सुनने के लिये खड़े हो जाते या बैठ जाते ।

१४ नमाज़ में क़ुरआन मजीद की तिलावत फ़रमाते तो सीने मुबारक से हांडी खोलने की सी सदा (आवाज़) आती, ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से यह हालत होती थी।

१५ घर वालों का बहुत ख़्याल रखते कि किसी को आप से तकलीफ़ न पहुंचे इसी लिये रात को बाहर जाना होता तो आहिस्ता से उठते, आहिस्ता से जूता पहनते, आहिस्ता से किवाड़ खोलते, आहिस्ता से बाहर चले जाते । इसी तरह घर में तशरीफ़ लाते तो आहिस्ता से आते ताकि सोने वालों को तकलीफ़ न हो और किसी की नींद ख़राब न हो जाये ।

१६ जब चलते तो निगाह नीची ज़मीन की तरफ़ रखते मजमा के साथ चलते तो सबसे पीछे होते और कोई सामने से आता तो

सबसे पहले सलाम आप ही करते।

१७ सात बरस का बच्चा हो जाये तो नमाज़ और दीगर दीन की बातों का हुक्म करना।

१८ दस बरस का बच्चा हो जाये तो मार कर नमाज़ पढ़वाना।

१९ किसी क़ौम का आबरूदार (बड़ा आदमी) हो तो उसके साथ इज़्ज़त से पेश आना।

२० अपने औक़ात में से कुछ वक़्त अल्लाह की इबादत के लिये कुछ घर वालों के हुकूक़ अदा करने के लिये जैसे उनसे हंसना, बोलना और एक हिस्सा अपने बदन की राहत के लिये निकालना।

२१ सरवरे दो आलम स० पर दरूद शरीफ़ पढ़ते रहना पड़ोसी के साथ एहसान करना, बड़ों की इज़्ज़त करना, छोटों पर रहम करना।

२२ कोई रिश्तेदार बदसलूकी करे उसके साथ सलूक से पेश आना।

२३ जब बच्चा पैदा हो उसके दायें कान में अज़ान और बायें कान में तकबीर कहना जब सात रोज़ का हो जाये उसका अच्छा सा नाम रखना किसी बुज़ुर्ग से छुवारा चबवा कर बच्चे के मुंह में डालना या चटाना।

२४ पड़ोसी को अपनी ईज़ा से बचाना उससे अच्छी बात करना वरना ख़ामोश रहना।

२५ सिलह रहमी (मैत्री व दया) करना।

२६ ज़ेरे नाफ़ (नाफ़ के नीचे), बग़ल और नाक के बाल काटना चालीस रोज़ गुज़र जायें और सफाई न करे तो गुनहगार होगा।

२७ एक मुश्त (मुठ्ठी) से ज़्यादा दाढ़ी रखना या एक मुश्त रखना मूंछों को कतरवाना, कतरवाने में मुबालग़ा करना।

२८ जो लोग दुनिया के ऐतिबार (अनुसार) से कमज़ोर हैं उनकी तरफ़ ख़्याल रखना।

२९ बीवी का दिल ख़ुश करने के लिये उससे मज़ाक करना और हंसी की बात करना भी सुन्नत है।

३० बायें जानिब तकिया लगाना।

३१ बाद नमाज़े फजर इशराक तक आप स० मस्जिद में मुरब्बा (आलती-पालती) बैठते थे। नीज़ अपने असहाब (रज़ि०) (साथियों) में भी आप स० मुरब्बा बैठते थे। अलबत्ता छोटों को बड़ों के सामने दो ज़ानू (दोनों टांगों को बिछाकर) बैठना "अक़रब इलत्तवाज़ुअ़ि लिखा है। –शामी जि० १

३२ अपने भाई मुसलमान से कुशादा चेहरे से मिलना और अपनी जगह से किसी क़दर हट जाना उसके बिठाने के लिये अगर ज़रा ही मुतहर्रिक (हरकत) हो जाना भी सुन्नत है।

३३ सवारी पर उसके मालिक को आगे बैठने के लिये कहना और बग़ैर उसकी सरीह (स्पष्ट) इजाज़त आगे न बैठना सुन्नत है।

"रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अंतस्समीउ़ल अ़लीम वतुब अ़लैना इननक अंतत्तव्वाबुर्रहीम"

मो० अख़्तर अ़फ़ल्लाहु अ़नहु

२८ मुहर्रमुलहराम १४०३